एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

भिण्डी की उन्नत खेती

(*श्रद्धा चौहान, डॉ. विनीता सिंह एवं लवकेश कुमार लोधी)
ए.के.एस. विश्वविद्यालय, सतना, मध्यप्रदेश
*संवादी लेखक का ईमेल पता: shraddhachowhan@gmail.com

देश के किसान विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती करते हैं इनमें भिण्डी का एक प्रमुख स्थान है। इसको लेडी फिंगर या ओक्रा भी कहा जाता है। भिण्डी को सब्जियों की ''रानी'' भी कहा जाता है। किसान भिण्डी की अगेती खेती करके खूब मुनाफा कमा सकते हैं। गर्मियों में बाजार में भिण्डी की काफी मांग होती है, क्योंकि इसमें विटामिन ए और सी समेत कई पोषक तत्व पाये जाते हैं। यह फसल ग्रीष्म तथा खरीफ दोनों ही ऋतुओं में उगायी जाती है।

वानस्पतिक नाम	–	एबेलमोस्कस एस्कुलेंटस
कुल	–	मालवेसी
गुणसूत्र	–	2n = 130
उत्पत्ति स्थान	–	अफ्रीका

भूमि व खेती तैयारी – भिण्डी के लिये दीर्घ अवधि का गर्म व नम वातावरण श्रेष्ठ माना जाता है। बीज उगाने के लिये 27 – 30 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान उपयुक्त होता है तथा 17 डिग्री सेल्सियस तापमान से कम पर बीज अंकूरित नहीं होते हैं। यह फसल उत्तम जल निकास वाली सभी जगह की भूमियों में उगाया जा सकता है। भूमि का पी.एच. मान 7.0 से 7.8 होना उपयुक्त रहता है। भूमि की दो तीन बार जुताई भुर–भुरी कर तथा पाटा चलाकर समतल कर लेना चाहिये।

उन्नत किस्में :–

1. **परभनी क्रान्ति :–**

- यह किस्म पीत रोग रोधी है।
- यह प्रजाति 1985 में मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय परभनी द्वारा निकाली गयी है।
- फसल बोआई के लगभग 50 दिन बाद फसल आना शुरू हो जाती है।
- फसल गहरे हरे एवं 15 से 18 सेन्टीमीटर लंबे होते हैं।
- इसकी पैदावार 9 से 12 टन प्रति हेक्टेयर है।

2. **पूसा ए :–**

- यह भिण्डी की एक उत्तम किस्म है।
- यह प्रजाति 1995 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा निकाली गयी है।
- यह एफिड तथा जैसिड के प्रति सहनशील है।
- यह पीतरोग एलो वेन मौजैक विषाणु रोग रोधी है।
- बोने के लगभग 15 दिन बाद से फसल आना शुरू हो जाते हैं तथा पहले तुड़ाई 45 दिन बाद शुरू हो जाती है।
- इसकी औसत पैदावार ग्रीष्म में 10 टन व खरीफ में 15 टन प्रति हेक्टेयर है।

3. **अर्का अनामिका :–**

- यह किस्म भारतीय बागवानी अनुसंधान, बैंगलोर द्वारा निकाली गयी है।
- यह किस्म एलो वेन मौजेक विषाणु रोगरोधी है।
- इसके पौधे 120 से 150 सेन्टीमीटर ऊंचे सीधे एवं अच्छी शाखायुक्त पौधे होते हैं।
- यह रोम रहित मुलायम गहरे हरे रंग तथा 5 से 6 धारियों वाली फसल होते हैं।
- इसकी पैदावार 12 से 15 टन प्रति हेक्टेयर पैदावार हो जाती है।

4. **पंजाब –7**

- यह पीत रोगरोधी है।
- यह किस्म पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा निकाली गयी है।
- इस किस्म की फसल हरे एवं मध्य आकार के होते हैं।
- बुआई के लगभग 55 दिन बाद फसल आना शुरू हो जाते हैं।
- इसकी पैदावार 8 से 12 टन प्रति हेक्टेयर है।

5. **अर्का अभय :–**

- यह किस्म भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर द्वारा निकाली गयी है।
- यह किस्म ऐलो वेन मौजेक विषाणु द्वारा रोग रोधी हैं।
- इसके पौधे की ऊंचाई 120 से 150 सेन्टीमीटर होती हैं

6. वर्षा उपहार :–

- यह किस्म चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा निकाली गयी है।
- इसके पौधे मध्यम ऊंचाई 90 से 120 सेन्टीमीटर होते हैं तथा इसके इन्टरनोड पास–पास होते हैं।
- इसके फूल चौथी पांचवी गांठियों से निकलने लगते हैं।
- इसकी औसत पैदावार 9 से 10 टन प्रति हेक्टेयर होती है इसकी खेती ग्रीष्म ऋतु में भी कर सकते हैं।

7. हिसार उन्नत :–

- इस किस्म के पौधे की मध्यम लम्बाई 90 से 120 सेन्टीमीटर होती है।
- इस किस्म के इंटरनोड पास–पास होते हैं। पौधों में उपशाखायें प्रत्येक नोड से निकलती है। पत्तियों का रंग गहरा हरा रंग का होता है।
- इसकी औसत पैदावार 12 से 13 टन प्रति हेक्टेयर होती है।

बीज की मात्रा :– सिचिंत अवस्था में 2.5 – 3 किलोग्राम तथा असिंचित दशा में 5 से 7 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है तथा संकर किस्म के लिये 5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।

बुआई का तरीका :– वर्षाकालीन भिण्डी के लिये कतार से कतार की दूरी 40 से 45 सेन्टीमीटर व कतार में बाजार के पौधों के बीच की दूरी 25 से 30 सेन्टीमीटर अंतर रखना उचित रहता है। ग्रीष्माकालीन भिण्डी की बुआई कतारों में करना चाहिये, कतार में पौधे से पौधों के मध्य की दूरी 15 से 20 से.मी. होनी चाहिये। बीज की दो से तीन सेन्टीमीटर गहराई पर बोना चाहिये। बोआई के पूर्व भिण्डी के बीजों को 3 ग्राम मेन्कोजेब, कार्बेन्डाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिये।

निंदाई–गुड़ाई :– अन्य फसलों की तरह अधिक उत्पादन के लिये भिण्डी की खेती में नियमित निंदाई–गुड़ाई करना चाहिये। पहली निंदाई–गुड़ाई बुआई के 15 से 20 दिन बाद करना चाहिये।

बुआई का समय :– ग्रीष्मकालीन भिण्डी की बुआई फरवरी, मार्च में तथा वर्षाकालीन भिण्डी की बुआई जून–जुलाई में की जाती है।

खाद्य और उर्वरक :– भिण्डी की फसल में अच्छा उत्पादन लेने हेतु प्रति हेक्टेयर क्षेत्र में लगभग 15 से 20 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद एवं नत्रजन, सल्फर, पोटाश क्रमशः 80 किलोग्राम, 60 किलोग्राम और फिर 60

किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर में मिट्टी में होना चाहिये।

सिंचाई :– सिंचाई मार्च में 10 से 12 दिन और अप्रैल में 7 से 8 दिन और मई–जून के अंतराल पर सिंचाई करें। बरसात में यदि वर्षा होती है तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है।

पौध संरक्षण :– भिण्डी में एलो वेन मौजेक विषाणु एवं चूर्णिम आसिता रोग लगता है।

- एलो वेन मौजेक विषाणु :– इस रोग के लक्षण यह है कि पत्तियों की शिराये पीली पड़ने लगती हैं पूरी पत्तियां पीले रंग के हो जाते हैं और पौधों के बढ़वार रूक जाती है।

रोकथाम :– इसकी रोकथाम के लिये आक्सी मिथाईल, डेमेटान 25 प्रतिशत ई.सी. अथवा डाई मिथ्योएट 30 प्रति ई.सी. की 1.5 लीटर पानी में अथवा प्रति डाईक्लोरोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. अथवा एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत पी.एच. 5 मिलीग्राम मात्रा 15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

चूर्णिम आसिता रोग :– इस रोग में भिण्डी की पुरानी निचली पत्तियों पर सफेद चूर्ण युक्त हल्के धब्बे पड़ने लगते हैं।

रोकथाम :– इसकी रोकथाम के लिये हेक्साकोनोजल 5 प्रतिशत ई.सी. की 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर दो से तीन बार बारह से पन्द्रह दिनों के अंतराल में छिड़काव करना चाहिये।

कीट से पौधों का बचाव :–

प्रागेह एवं फल छेदक – इस कीट का प्रकोप वर्षा ऋतु में अधिक होता है प्रारंभिक अवस्था में इल्ली कोमल तने में छेद करती है जिससे तना सूख जाता है। फूल पर इसके आक्रमण से फल लगने के पूर्व फूल गिर जाते हैं। फल लगने पर इल्ली छेद कर इन्हें खा जाती है जिससे फल मुड़ जाते हैं।

रोकथाम :– रोकथाम हेतु क्विनीलफास 25 प्रतिशत ई.सी. क्लोरोपायरोफास 20 प्रतिशत ई.सी. अथवा प्रोफिनफास 50 प्रतिशत ई.सी. की 25 मिली.लीटर की मात्रा पानी में घोलकर छिड़काव करें।

सफेद मक्खी :– ये सूक्ष्म आकार की कीट पत्तियां, कोमल तने एवं फल के रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं।

रोकथाम :– रोकथाम हेतु ऑक्सी मिथाईल, डेमेटान 25 प्रतिशत ई.सी. तथा डाई मिथ्योएट 30 प्रतिशत ई.सी., 1.5 मिली लीटर मात्रा प्रति लीटर पानी में अथवा इमिडा क्लोरोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. तथा एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत, एस.पी.की 5 मिली लीटर ग्राम मात्रा प्रति 15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

रेड स्पाईडर मक्खी :– यह माइड पौधों की पत्तियों की निचली सतह पर भारी संख्या में कॉलोनी बनाकर रहता है, यह अपने मुखांग से पत्तियों की कोषिकाओं में छिद्र करता है। इसके फलस्वरूप जो द्रव पदार्थ निकालता है उसे माईट चूसता है और क्षतिग्रस्त पत्तियां पीली पड़कर मुड़ जाती है व अधिक प्रकोप होने पर सम्पूर्ण सूखकर नष्ट हो जाता है।

रोकथाम :– इसके रोकथाम हेतु डाईकोफल 18.5 ई.सी. की 20 मिली लीटर मात्रा प्रति लीटर अथवा घुलनशील गंधक 2.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में डालकर छिड़काव करें।

कटाई व उपज :– भिण्डी की फसल तुड़ाई हेतु सी.आई.सी. भोपाल द्वारा विकसित ओक्रा पॉड पिंगर यंत्र का प्रयोग करें। किस्म की गुणवत्ता के अनुसार 45 से 60 दिनों में फसलों की तुड़ाई प्रारंभ हो जाती है एवं 4 से 5 दिनों के अंतराल में नियमित तुड़ाई की जानी चाहिये। ग्रीष्मकालीन भिण्डी फसल में उत्पादन 60 से 70 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होता है। भिण्डी की तुड़ाई हर तीसरे चौथे दिन अवश्य तुड़ाई की जानी चाहिये, तुड़ाई में थोड़ा अधिक समय हुआ तो फल कड़ा हो जाता है।

उचित किस्म व खाद्य :– उर्वरकों के प्रयोग से प्रति हेक्टेयर 130 से 150 क्विंटल हरी पत्तियां प्राप्त होती है।